Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 1 – 2021
ISSN: 2581-3501

श्रीमद्भागवत गीता में युद्ध की अवधारणाः मानव कल्याण के सन्दर्भ में

डॉ. नर्वदेश्वर पाण्डेय[1]

[1]*सह आचार्य रक्षा एवं स्त्रातजीय अध्ययन, का.सु.साकेत, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या।*

शोध सारांश

धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में कौरव सेना के भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य के अलावा ताऊ-चाचा, दादा- परदादा आदि के देखने पर कुन्तीपुत्र अर्जून को अत्यंत करुणा के कारण शोक उत्पन्न हो गया तो श्रीकृष्ण से कहा कि 'मै विजय, राज्य तथा सुख नहीं चाहता हूँ।' (न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च) धनुर्धारी अर्जुन का मानना है कि ऐसे राज्य, भोगों और जीवन का क्या प्रयोजन अथवा लाभ है, जिस युद्ध में स्वजन समुदाय को मार दिया जाय । इस पर श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है कि 'अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारी है, और दूसरे का धर्म भय को उत्पन्न करने वाला है।' (स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः)

शब्दकोश: श्रीकृष्ण, भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, राज्य, विजय, स्वधर्म, परधर्म आदि।

प्रस्तावना

जब से मनुष्य ने पृथ्वी पर पदार्पण किया है, तब से वह किसी न किसी प्रकार का युद्ध करता रहा है। मनुष्य ने सर्वप्रथम युद्ध के लिए हथियारों का निर्माण किया न कि शान्तिपूर्ण कार्यों के लिए औजारों का। वास्तव में देखा जाय तो अतीत काल से मानव जाति का युद्ध से अटूट सहचर सम्बन्ध रहा है। यद्यपि धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं नैतिक पद्धतियॉ केवल बदलती ही नहीं अपितु कभी-कभी पूर्णतया लुप्त हो जाती हैं, सैनिक पद्धतियॉ बदलती तो है,

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

परन्तु युद्ध कभी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ है। इस प्रकार युद्ध ने मानवीय क्रियाओं में सदा से ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

पूर्व की प्राचीन धर्म पुस्तकों (scriptures) तथा ग्रीस के महान दार्शनिकों ने युद्ध करने तथा तथा अपने प्रदेशों की रक्षा करने के कार्यों को राज्य के अभिन्न अंग के रूप में लिया है ।भारत के कौटिल्य (चाणक्य) ग्रीस के प्लेटो और अरस्तू, इटली के मैकियावेली, जर्मनी के क्लाजविट्ज ने अर्थात् इन सभी ने युद्ध की वकालत राष्ट्र की नीति के एक साधन के रूप में ही की है। वास्तव में प्रत्येक राज्य अथवा देश को एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में अपने अस्तित्व को कायम रखने एवं वाह्य आक्रमणों से अपने नागरिकों की सुरक्षा करने हेतु आवश्यकता पड़ने पर युद्ध का रास्ता अपनाना पड़ता है।

युद्ध- राष्ट्रीय नीति के साधन के रूप में

(War is an Instrument of National Policy)

युद्ध राष्ट्र की नीति को कार्यान्वित करने का अन्तिम साधन है। कम से कम वह युद्ध जो सभ्य समुदायों के बीच होता है, राष्ट्र की नीति का ही अन्तिम साधन रहा है।जब एक राज्य को यह दिखाई देता है कि उसकी नीति को सुचारु चलाने में बाधा पड़ रही है, तब वह युद्ध कर सकता है। युद्ध के इस परम्परागत कार्य को क्लाजविट्ज ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि "युद्ध और कुछ नहीं है अपितु अन्य साधनों द्वारा राष्ट्र की नीति का चालाया जाना है"। (War is a continuation of policy by other means)[1]

क्विंसी राइट के अनुसार "युद्ध दो विभिन्न परन्तु समान इकाइयों के मध्य हिंसात्मक संघर्ष है।" (War is a violent contract of two distinct but similar entities)[2]

प्रो. ईगलटन के अनुसार "अपने अधिकारों को जबरदस्ती प्राप्त करने,विषम परिस्थितियों को अनुकूल बनाने तथा विवादों का समाधान करने का माध्यम ही युद्ध कहा जाता है"[3]

F. M. Osanka के अनुसार, "युद्ध दो संगठित राजनीतिक दलों (सरकार या अन्य) के बीच की पारम्परिक हिंसात्मक क्रिया है।"[4]

New English Dictionary में उल्लेख किया गया है कि "दो राष्ट्रों, शासकों या पार्टियों के मध्य हथियारों द्वारा किया जाने वाला शत्रुतापूर्ण विरोध व एक राज्य पार्टी के विरुद्ध अथवा एक विदेशी शक्ति सेवाओं का प्रयोग ही युद्ध कहलाता है।[5]

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 1 – 2021
ISSN: 2581-3501

श्रीमद्भागवत गीता का युद्ध दर्शन-

श्रीमद्भागवत गीता जी का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि युद्ध में मानव कल्याण की भावना छिपी हुई है। जब युद्धभूमि में अर्जुन देखते है कि युद्ध अपने सम्बंधियों से करना है तो मन शोक से उद्विग्न हो जाता है, बाण सहित धनुषको त्यागकर रथ के पिछले भाग में बैठ जाते हैं। जब करुणा से व्याप्त और आँसुओं से पूर्ण तथा व्याकुल नेत्रोंवाले शोकयुक्त उस अर्जुन के प्रति भगवान् मधुसूदन ने कहा कि-हे अर्जुन! तुझे इस असमयमें यह मोह किस हेतु से प्राप्त हुआ! क्योंकि न तो यह श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा आचरित है,न स्वर्ग को देनेवाला है और न कीर्ति को करनेवाला ही है। इस लिए हे अर्जुन! नपुंसकता को मत प्राप्त हो, तुझमें यह उचित नहीं जान पड़ती। हे परंतप! हृदयकी तुच्छ दुर्बलता को त्यागकर युद्धके लिये खड़ा हो जा । श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।

अनार्यजुष्टमस्वग्यर्मकीर्तिकरमर्जन।।

क्लैब्यं मा स्म गमःपार्थ नैतत्तवय्युपपद्यते।

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप।। श्रीमद्भागवत गीता-2/3-4

अर्जुन बोले - हे मधुसूदन! मैं रणभूमि में किस प्रकार बाणोंसे भीष्म पितामह और गुरुद्रोणाचार्य के विरुद्ध लड़ूगा ? क्योंकि हे अरिसूदन! वे दोनों ही पूजनीय हैं। इसलिए इन महानुभाव गुरुजनों को न मारकर मैं इस लोकमें भिक्षाका अन्न भी खाना कल्याणकारक भी समझता हूँ; क्योंकि गुरुजनों को मारकर भी इस लोक में रुधिर से सने हुए अर्थ और कामरूप भोगों को ही तो भोगूगा। हम यह भी नहीं जानते कि हमारे लिए युद्ध करना और न करना - इन दोनोंमें से कौन-सा श्रेष्ठ है, अथवा यह भी नहीं जानते कि उन्हें हम जीतेंगे या हमको वे जीतेंग। जिनको मारकर हम जीना भी नहीं चाहते,वे ही हमारे आत्मीय धृतराष्ट्र के पुत्र हमारे मुकाबले में खड़े हैं।

गुरूनहत्वा हि महानुभावाञ्छ्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।

हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगानरुधिरप्रदिग्धान्द्य।

न चैतद्विद्मयःकतरन्नो गरीयोयद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।

यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेइवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।। श्रीमद्भागवत गीता - 2 /5-6

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

कायरतारूप दोषसे उपहत हुए स्वभाव (कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः) अर्जुन श्रीगोविन्दभगवान् से कहते है 'युद्ध नहीं करूगा' इस पर श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि-हे अर्जुन! तू न शोक करने योग्य मनुष्यों के लिए शोक करता है और पण्डितोंके-से वचनोंको कहता है; परंतु जिनके प्राण चले गए हैं, उनके लिए जिनके प्राण नहीं गये हैं उनके लिए भी पण्डितजन शोक नहीं करते।

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।

गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।। श्रीमद्भागवत गीता2/11

आधुनिक युग में युद्ध की प्रकृति और क्षेत्र बदल गया है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से अपनी नीतियों को क्रियान्वित करने लिए प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का सहारा न लेकर अप्रत्यक्ष रूप से शत्रु राष्ट्र में आतंकवाद, नक्सलवाद विप्लव (Insurgency) गतिविधियों को बढ़ावा देकर अपरम्परागत युद्ध (Unconventional War) लड़ रहा है । भारत में जितनी भी आतंकवादी, नक्सलवाद विप्लवादी घटनाएं हो रही है,वह पाकिस्तान एवं चीन द्वारा पोषित हैं। आतंकवादियों ने संसद पर, आर्थिक राजधानी मुंबई, तकनीकी राजधानी बंगलौर, सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी, धार्मिक राजधानी अयोध्या रामजन्म भूमि पर आक्रमण कर करके जनता- जनार्दन को अपना निशाना बनाया है, तथा अनगिनत लोगों की हत्यायें की है। 'आप्रेशन ब्लू स्टार ' जिसके अन्तर्गत सेना आतंकवादियों को ' स्वर्णमन्दिर' से मुक्त कराने के लिए प्रवेश की थी, तत्कालीन सेनाध्यक्ष ए.एस.वैद्य की हत्या कर दी। उनका कसूर मात्र इतना था कि उन्होंने 'आप्रेशन ब्लूस्टार' के दौरान सेना का नेतृत्व किया था। देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या उनकी सुरक्षा गार्डों ने कर दिया, क्योंकि उनके निर्देशन अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सेनाआतंकवादियों से मुक्त कराया था। ऐसी परिस्थिति में राष्ट्र- धर्म के लिए श्रीमद्भागवत गीता अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है जैसे श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरोंको त्यागकर दूसरे नये शरीरोंको प्राप्त होता है। इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते,इसको आग नहीं जला सकती,इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। श्रीमद्भागवत गीता-2/ 22-23

यह आत्मा अव्यक्त है,यह आत्मा अचिन्त्य है और यह आत्मा विकार रहित कहा जाता है। इससे हे अर्जुन! इस आत्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानकर तू शोक करनेको योग्य नहीं है अर्थात् तुझे शोक करना उचित नहीं हू।जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपाय वाले विषय में तू शोक करने को योग्य नही है।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितमर्हसि।।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।। श्रीमद्भागवत गीता-2/ 25- 27

इस प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्ममें तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात्

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।। श्रीमद्भागवत गीता- 3/ 35

युद्ध का कारण

अर्जुन का एक उपनाम भारत भी है। युद्ध के कारण को स्पष्ट करते हुए श्रीकृष्णअर्जुन से कहते है कि हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दचष्कृताम्

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। श्रीमद्भागवत गीता- 4/ 7-8

मानव-कल्याण (लोक-कल्याण)

किष्किन्धा के राजा बालि की धर्मपत्नी तारा अपने पति को भगवान श्रीराम से युद्ध करने के लिए रोकती है, तब बालि कहते है कि-

कह बालि सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ।

जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउं सनाथ।। श्रीरामचरितमानस-5/7

हे भीरु (डरपोक) प्रिये! सुनो श्रीरघुनाथजी समदर्शी हैं। जो कदाचित् वे मुझे मारेंगे ही तो मैं सनाथ हो जाऊंगा (परमपद पा जाऊंगा)। युद्ध भूमि में श्रीराम जी के प्रचण्ड बाण के लगते ही बालि व्याकुल होकर गिर पड़ते हैं, परन्तु श्रीरामचन्द्र जी को सामने देखते ही उठकर बैठ जाते है और कहते है कि-

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं।मारेहु मोहि ब्याध की नाईं।।

मैं बैरी सुग्रीव पियारा।अवगुन कवन नाथ मोहि मारा।। श्रीरामचरितमानस-5 /8/5-6

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं----। यद्यपि छिपकर युद्ध करना अधर्म है, सामना करके युद्ध करना धर्म है; परन्तु इस प्रसंग में छिपकर बालिको मारना ही धर्म है। श्रीराम जी तो परम धर्मज्ञ हैं। 'धरम धुरीन भानुकूल भानू' विधर्म का परित्याग करके धर्मका पालन ही किया है। छिपकर मारनेमें अनेक देवताओं के प्राणों की रक्षा हो गयी है। अनेक निरपराध प्राणियों का वध नहीं हुआ। अपराधी को दण्ड भी मिल गया।

'ब्याध की नाईं' -- ब्याध की नाईं भाव है कि आपने व्याधकी तरह के वल छिपकर मारा है। (व्याधकी क्रूरता, कठोरता आपके पास कहां है?) व्याध अपने लक्ष्य का वेध करके प्रसन्न होता है, उसे तड़फता देखकर उसका मन मुदित हो जाता है; परन्तु आपतो मुझे तड़फता देखकर स्वयं तड़फ उठे हैं। जैसे मां अपराधी बेटेको खूब मारकर उसे तड़फते देखकर मां तड़फ उठती है। आपने मुझे व्याधकी तरह छिपकर अवश्य मारा है; परन्तु मेरी पीड़ा निवृत करने के लिए आपने तुरन्त मेरे पास आकर वदनारविन्द का दर्शन देकर मेरी पीड़ा निवृत कर दी। इसी प्रकार का

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

प्रयोग भगवान् श्रीराम ने पितृकल्प श्रीजटायु के लिए किया है। निरखि राम छवि धाम मुख बिगत भई सब पीर।

निष्कर्ष

आधुनिक यद्धों में निः संदेह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान सर्वोपरि है। इन्हीं के कारण युद्ध में विध्वंस का अनुपात बढ़ता गया है, जिसके कारण परमाणु बम एवं महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों का विकास हुआ है। ये हथियार किसी भी राष्ट्र के गौरव के प्रतीक बन गए है, परन्तु इससे पूरी मानवता को नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। आज पूरा विश्व एवं मानव समाज आतंकित है, तथा उसे निरन्तर यह सोचने के लिए बाध्य किया जा रहा है कि क्या परमाणु प्रहार से बचने का कोई विकल्प उसके पास है ? इसका एक सटीक उत्तर यहीं है कि जो हथियार बनाये जातें हैं, उनका प्रयोग तो होता ही है। अतः इनका प्रयोग तो भावी विश्वव्यापी युद्ध में होना ही है, तथा विश्व का प्रलय भी सुनिश्चित है। इस प्रलय से बचने का एक ही उपाय है और वह है सभी राष्ट्र के राजनेताओं में सद्बुद्धि एवं सद्ज्ञान का समावेश होना ताकि विश्व शांति कायम की जा सके और मानव समाज को युद्ध के थपेडों से बचाया जा सके। अब युद्ध से कोई लाभ नहीं हो सकता। अब यह विनाश की वस्तु मात्र रह गई है और इसे राजनीति के साधन के रूप में प्रयोग करना अव्यवहारिक है। क्लाजविट्ज का यह प्रसिद्ध सिद्धान्त कि युद्ध नीति को अन्य साधनों द्वारा चलाए जाने का तरीका है आज के हाइड्रोजन बम से लड़ें जाने वाले युद्धों पर लागू नहीं होता क्योंकि इससे होने वाले विनाश से पूरी-पूरी आशा है कि इन युद्धों में भाग लेने वाले सारे राष्ट्र, राज्य और समाज नष्ट हो जायेंगे। लेकिन एक बात देखने को जरूर मिलती है कि द्वितीय विश्व-युद्ध में जापान एवं जर्मनी को पराजय मिली थी, लगभग नष्ट हो गये थे, किन्तु आज विश्व रंगमंच पर शक्तिशाली राष्ट्र होकर सामने आये है जो यह सिद्ध करता है कि युद्ध के अन्तर्गत मानव कल्याण (लोक-कल्याण) की भावना छिपी रहती है श्रीमद्भागवत गीता में सञ्जय कहते है कि जहाँ योगेश्वर कृष्ण है और जहाँ परम धनुर्धर अर्जुन है, वहीं ऐश्वर्य, विजय, अलौकिक शक्ति तथा नीति भी निश्चित रूप से रहती है। ऐसा मेरा मत है।

यत्र योगेश्वरःकृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नितिर्मतिर्मम।। श्रीमद्भागवत गीता- 18/ 78

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

महाभारत के युद्ध में भीष्म पितामह गुरु द्रोणाचार्य की मृत्यु से स्पष्ट होता है कि इनके लिए युद्ध का उद्देश्य ' मोक्ष' था। आवा-गमन के चक्र से मुक्ति का था। रावण भी यही सोचता है--

खर दूषन मोहि सम बलवंता। तिन्हहि को मारइ बिनु भगवंता।।

सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा।।

तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊं। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊं।।

होइहि भजनु न तामस देहा। मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा।। श्रीरामचरितमानस- 3/ 22/ 2-3-4-5

यदि भगवान ने अवतार लिया है तो भवसन्तरण के दो उपाय हैं-युद्ध अथवा भजन। रावण ने रातभर सोचकर निर्णय कर लिया-मैं हठपूर्वक उनसे (भगवान से) शत्रुता करुंगा और उनके बाणों से मरकर भव पार हो जाऊंगा। मेरे तामसी शरीर से भजन नहीं होगा।

सन्दर्भ सूची

1. On War: translated by O.J. Mathiyus Rooles p.596.
2. Quincy Wright: A Study of War p.8.
3. Clyde Eagleton: Analysis of the Problem of War p.5.
4. F.M. Osnka: Modern Guerilla Warfare p. 131.
5. Cited in Palmer & Parinks: International Relations p.131.
6. श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर।
7. श्रीमद्भागवत गीता भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, जुहू मुंबई
8. श्रीरामचरितमानस गीता प्रेस गोरखपुर।
9. आचार्य कृपाशंकर रामायणीः श्रीरामचरितमानस कथा-सुधा-सागर प्रकाशकः श्रीगंगादास कृपाशंकर सेवा संस्थान श्री अयोध्याजी।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.